मनुष्य जीवन की गारन्टी

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,
पूर्व कुलपति, सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

हम जब बाजार में जाकर कोई सामान खरीदते हैं तो उस सामान की गारन्टी के विषय में दुकानदार से पूछते हैं। यदि गारन्टी पीरियड में वस्तु खराब हो जाती है तो यह माना जाता है कि वस्तु के बनावट में कोई खराबी है। इसलिए उस वस्तु को बदलकर दुकानदार उसके स्थान पर दूसरी वस्तु देता है। हर प्रोडक्ट्स गारन्टी होती है। क्या शरीर की कोई गारन्टी ले सकता है? मैं समझता हूं कोई भी व्यक्ति शरीर की गारन्टी नहीं ले सकता। संयोग के साथ वियोग जुड़ा रहता है। माता–पिता, भाई–बहिन, बेटा–बेटी सभी एक न एक दिन जाने वाले हैं। शरीर भी एक दिन चला जाता है। केवल एक ही तत्व स्थाई है वह है आत्मा। शरीर मिश्र चेतन है। शरीर जड़ और आत्मा चेतन है। आत्मा के रहने पर ही शरीर का अस्तित्व है। शरीर की कोई गारन्टी नहीं है।

शरीर पंचतत्वों से बना हुआ एक पिण्ड है। आयुष कर्म के अनुसार यह चलता है। आयुष कर्म के क्षीण हो जाने पर यह नष्ट हो जाता है। मनुष्य की आयु पूर्व निर्धारित है उसका ज्ञान हमें नहीं रहता। मानव अविद्याग्रस्त होकर अहंकार के कारण अपने को शक्ति सम्पन्न मानता है। किन्तु वह बहुत ही निर्बल है। यहां सभी चीजें काल के अधीन है। काल सबको नष्ट कर देता है। यह सम्पूर्ण सृष्टि काल का चबेना है। कुछ को तो वह खा लिया है और कुछ उसकी गोद में है। वह नष्ट होने का इन्तजार कर रहा है।

यह शरीर क्षणभंगुर है, बुलबुले के समान नश्वर है। पानी का बुलबुला देखते–देखते ही फुट जाता है। जो कुछ भी पुण्य कर्म करना है उसे यथाशीघ्र कर लेना चाहिए। कल का इन्तजार नहीं करना चाहिए। वर्तमान में जीना सीखना चाहिए। अच्छाई का विस्तार और बुराई को दूर करने का प्रयास करना चाहिए। विषयभोग की बातें सुनने में ही अच्छी लगती हैं, वास्तव में मृगतृष्णा के जल के समान नितान्त असत्य है और यह शरीर भी, जिससे वे भोग भोगे जाते

हैं, अगणित रोगों का उद्‌गम स्थान है। कहां वे मिथ्या विषयभोग और कहां यह रोगयुक्त शरीर। इन दोनों की क्षणभंगुरता और असारता जानकर भी मनुष्य इनसे विरक्त नहीं होता।

यह संसार एक ऐसा अंधेरा कुआं है, जिसमें कालरूप सर्प डंसने के लिये सदा तैयार रहता है। विषय भोगों की इच्छा वाले पुरुष उसी में गिरे हुए हैं। यह सम्पूर्ण जगत एकमात्र ईश्वर से व्याप्त है। क्योंकि इसके आदि में ईश्वर ही कारणरूप से थे, अन्त में ईश्वर ही अवधि के रूप में रहेंगे और बीच में इसकी प्रतीति के रूप में भी केवल ईश्वर ही हैं। ईश्वर अपनी माया से गुणों के परिणामस्वरूप इस जगत की सृष्टि करके इसमें पहले से विद्यमान रहने पर भी प्रवेश की लीला करते है और उन गुणों से युक्त होकर अनेक मालूम पड़ रहे हैं।

यह जो कुछ कार्य कारण के रूप में प्रतीत हो रहा है, वह सब ईश्वर ही हैं और इससे भिन्न भी ईश्वर ही हैं। अपने पराये का भेदभाव तो अर्थहीन शब्दों की माया है, क्योंकि जिससे जिसका जन्म, स्थिति लय और प्रकाश होता है, वह उसका स्वरूप ही होता है– जैसे बीज और वृक्ष कारण और कार्य की दृष्टि से भिन्न–भिन्न हैं, तो भी गन्ध–तन्मात्र की दृष्टि से दोनों एक ही हैं।

ईश्वर इस सम्पूर्ण विश्व को सवयं ही अपने में समेटकर आत्मसुख का अनुभव करते हुए निष्क्रिय होकर प्रलयकालीन जल में शयन करते हैं। उस समय अपने स्वयंसिद्ध योग के द्वारा बाह्य दृष्टि को बंद कर ईश्वर अपने स्वरूप के प्रकाश में निद्रा को विलीन कर लेते हैं और तुरीय ब्रह्मपद में स्थित रहते हैं। उस समय ईश्वर न तो तमोगुण से ही युक्त होते और न तो विषयों को ही स्वीकार करते हैं।

ईश्वर अपनी कालशक्ति से प्रकृति के गुणों को प्रेरित करते हैं, इसलिये यह ब्रह्माण्ड ईश्वर का ही शरीर है। पहले यह ईश्वर में ही लीन था। जब प्रलयकालीन जल के भीतर शेषशय्या पर शयन करने वाले ईश्वर ने योगनिद्रा की समाधि त्याग दी, तब वट के बीज से विशाल वृक्ष के समान ईश्वर की नाभि से ब्रह्माण्डकमल उत्पन्न हुआ। उस पर सूक्ष्मदर्शी ब्रह्माजी प्रकट हुए। जब उन्हें कमल के सिवा और कुछ भी दिखायी न पड़ा, तब अपने में बीजरूप से व्याप्त

आपको वे न जान सके और आपको अपने से बाहर समझकर जल के भीतर घुसकर सौ वर्ष तक ढूंढते रहे। परन्तु वहां उन्हें कुछ नहीं मिला।

यह ठीक ही है, क्योंकि अंकुर उग आने पर उसमें व्याप्त बीज को कोई बाहर अलग कैसे देख सकता है। इस सृष्टि की भी कोई गारन्टी नहीं है। यह मायास्वरूप है। इसका अस्तित्व ही नहीं है। केवल दिखलाई पड़ती है। ईश्वर की माया शक्ति के कारण यह दृष्टिगोचर होती है। यह सृष्टि मिथ्या है। यह पंचतत्वों से बनी हुई है। इसलिए कहा जाता है कि जो पिण्ड में है वही ब्रह्माण्ड में है। वह सत्त्वगुण ही ईश्वर का अत्यन्त प्रिय शरीर है। प्रत्येक युग में उसके धर्मों की रक्षा करते हैं। इस संसार में मानव शरीर की कोई गारन्टी नहीं है इसलिए जब तक जीवन है तब तक ईश्वर का स्मरण करना चाहिए।